उद्देश्य : इस अध्याय के अंत में आप सीख पायेंगें
- पिनकर्लस के द्वारा हेयर स्टाइलिंग
- फिंगर वेविंग द्वारा हेयर स्टाइलिंग
- रोलर सेटिंग द्वारा हेयर स्टाइलिंग।

वेट स्टाइलिंग **(Wet styling)**: ये विभिन्न प्रकार के होते है। हेयर स्टाइल के अनुसार इनका प्रयोग किया जाता है।

ग्राहक की तैयार

- ग्राहक को सबसे पहले तौलिये से लपेटें ।
- तौलिये के ऊपर नेक केप लगायें।
- सामान को ट्रॉली पर लगायें।
- ग्राहक को आरामदेह स्थिति में बिठायें।

- पिनकर्ल्स **(Pincurls)**

पिनकर्ल्स सिर के किसी भी भाग में दिया जा सकता है किन्तु माथे के पास इसके प्रयोग का चलन है। हेयर स्टाइलिंग में विभिन्नता लाने के लिए पिनकर्ल्स दिए जाते है जैसे

- सिर के आधार (on the base) : इस विधि में बहुत हल्के कर्ल्स (Curls) आते है और नया आकार दिया जाता है।
- पूरी लट पर (on the hair stem) : इस विधि में बहुत सारे कर्ल्स आते है।

- बाल के अंतिम छोर पर (on the ends) : इस विधि में वास्तविक

कर्ल्स प्राप्त होते है।

पिनकर्ल्स को निम्नलिखित नाम के द्वारा जाना जाता है।

- वर्गाकार (Square)
- उल्टे पिनकर्ल्स (inverted pincurls)
- आयताकार (ractangular)
- त्रिभुज (Trianlge)
- नया रूप देना (Sculpted) इत्यादि।

- फिंगर वेविंग **(Finger waving)**

इस विधि में ऊँगलियों और कंघी की सहायता से बाल पर वेविंग लोशन द्वारा वेव दिया जाता है। यह घुमाव या वेव "S" के आकार मे दिया जाता है। फिंगर वेविंग करते समय ध्यान रहें कि बाल पानी और वेविंग लोशन द्वारा गीले हों। जिससे कि सूखने पर हेयर स्टाइल टिका रहें।

- रोलर सेटिंग **(Roller setting)**

रोलर सेटिंग से हेयर स्टाइलिंग अधिक समय तक टिके रहने के लिए प्रयोग की जाती है। हेयर स्टाइलिंग में रोलर्स का प्रयोग किया जाता है

जो विभिन्न लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई में प्रयोग होते है।

रोलर हेयर स्टाइलिंग के लिए रोलर्स के आकार (छोटे से बड़ें आकार में)

छोटे आकार के रोलर अधिक कर्ल्स देते है जैसे जैसे आकार बढ़ता है कर्ल्स का साइज भी बढ़ता चला जाता है।

हेयर स्टाइलिंग में रोलर सेटिंग तीन प्रकार से की जाती है।

- ऑन बेस (On base)
- हाफ बेस (Half base)
- ऑफ बेस (Off base)

ऑन बेस (On base) : इस विधि में जहाँ से बाल लिए गए है उसी के सिर के आधार पर 90^0 के कोण पर रोलर को लगाया जाता है। बाल में अधिक कर्ल्स और वॉल्यूम प्राप्त होता है।

हाफ बेस (Half base) : इस विधि के द्वारा रोलर, बाल के बेस के आधे आधार के नीचे लगाये जाते है जिससे मध्यम आकार के वॉल्यूम और कर्ल्स प्राप्त होते है।

ऑफ बेस (Off base) : इस विधि में रोलर बेस के नीचे लगाये जाते है जिससे केवल वॉल्यूम प्राप्त होता है।

उद्देश्य : इस अध्याय के अंत में आप सीख पायेंगें
- विग को बनाने के प्रकार
- विग के प्रकार
- आर्टिफिशियल ऐडस की सफाई व रखरखाव
- सुरक्षात्मक सावधनियां।

हुड हेयर ड्रायर (Hood hair dryer) : हुड हेयर ड्रायर की सहायता से रोलर द्वारा रोल किए बालों को सुखाया जाता है।

आर्टिफिशियल ऐड्स (Artificial Aids)

फैशन जगत में आर्टिफिशियल ऐडस जिसमें विग्स व अनेक प्रकार के हेयर पीसिज़ (Hair pieces) का प्रयोग प्रचलित है। लोग इनका प्रयोग स्टाइल को बदलने के लिए या गंजापन आने पर करते है।

4000 BC के समय से मिश्र के लोग अपने सिर को स्टाइल देने के लिए रेज़र का प्रयोग करते थे और घने बालों वाली विग्स पहनते थे। उच्च वर्ग के लोग अच्छी क्वालिटी के विग्स पहनते थे। जो उनके स्टाइल का प्रतीक होता था। धीरे धीरे अनके रंगों में व क्वालिटी में विग्स बनाए जाने लगे। 18वीं शताब्दी में अंग्रेज लोग कोर्ट में वकालत के समय विभिन्न प्रकार की विग्स का प्रयोग एक युनिफॉर्म के रूप में प्रयोग किया जाता था।

कई बार विग्स का प्रयोग चोट या कट को छुपाने के लिए भी किया जाता है। भारत में लम्बे बालों को वेग जूड़े के साथ चोटी के रूप में मिलने लगे।

विग पहनने का उद्देश्य (Purpose of wig)

- विग को पहनने का मुख्य कारण सिर की चमड़ी को ढकना है।
- विभिन्न प्रकार के हेयर स्टाइल देना।
- विग्स तीन प्रकार के बाल द्वारा बनाई जाती है।

  मनुष्य के बाल (Human hair)

  जानवर के बाल (Animal hair)

  कृत्रिम बाल (Synthetic hair)

मनुष्य के बाल (Human hair) : यह विग्स या हेयर पीसिज़ जानवर के बाल या कृत्रिम बालों से अधिक महंगे होते है। यह हाथ के द्वारा बनाये जाते है। यह बाल मुलायम और वास्तविक दिखते है। वास्तविक दिखने के कारण उच्च वर्ग में अधिक मात्रा में प्रयोग किए जाते है।

जानवर के बाल (Animal hair) : यह जानवर के बाल (yak/goat hair) से बनाये जाते है। कई बार घोड़े के बाल को भी मिलाया जाता है। इनका प्रयोग बहुत कम होता है क्योंकि ये बाल मोटे और रूखे होते है।

कृत्रिम बाल (Synthetic hair) : कृत्रिम बाल अधिक चमक देने वाले होते है जो मनुष्य के बाल के जैसे दिखाई देते है। यह बाल जलने पर या अधिक ताप देने पर बदबू देते है। यह सबसे सस्ते होते है। यह विभिन्न लम्बाई में उपलब्ध होते है । भिन्न-भिन्न रंगों में भी प्राप्त किए जा सकते है।

आर्टिफि

- विग

- **स्विच (Switch)**

- **फॉल्स (falls)**

- **डमी विग्स (Dummy**

- कैर

विग्स (Wigs) : ये विभिन्न लम्बाई में उपलब्ध होते है। आवश्यकतानुसार विभिन्न रंगों के द्वारा भी इन्हें रंगा जा सकता है।

स्विच (Switch) : विभिन्न प्रकार के जूड़े व हेयर स्टाइल बना कर ग्राहक के सिर पर उसके अपने बालों के साथ जोड़ने की क्रिया है।

फॉल्स (falls) : इसका प्रयोग प्रायः सिर के क्राउन भाग से किया जाता है जिसकी विभिन्न लम्बाई होती है।

डमी विग्स (Dummy wigs) : डमी पर विग्स का प्रयोग देकर ग्राहक की आवश्यकतानुसार बनाए जाते है। ये छोटे साइज़ से बड़े साइज़ में उपलब्ध होते है।

कैसकेड्स (Cascades) : ये छोटे हेयर पिसिज़ होते है इनका प्रयोग सिर के बेस पर किया जाता है। भारत में इनका प्रयोग बहुत कम है।

आर्टिफिशियल ऐडस की सफाई और रखरखाव (Cleaning and maintaining of artificial aids)

- कृत्रिम बालों को समय समय पर साफ रखना आवश्यक है अन्यथा इनमें जुएँ या कीड़े आदि पड़ सकते है।
- इन्हें हमेशा सूखे स्थान व प्लास्टिक में लपेटकर रखना चाहिए।
- समय समय पर इसमें कीटाणु नाशक दवाई का स्प्रे करना चाहिए।
- कृत्रिम बालों को समय समय पर धोना आवश्यक है।
- शैम्पू को हाथों में लगाकर कृत्रिम बालों पर जहां से सिले हुए है उस तरफ से हाथों को नीचे की तरफ लगायें।
- कृत्रिम बाल को अच्छी तरह से मलने की आवश्यकता नही है।
- कृत्रिम बाल के बेस से हल्का मलते हुए अंतिम छोर तक जायें।
- साफ पानी में इसी विधि के द्वारा धोयें।
- हेयर ड्रायर की सहायता से इसी विधि द्वारा सुखायें।,

सुरक्षात्मक सावधनियां :

- हेयर पीस या कृत्रिम बाल सिर के बालों से मैच करने चाहिए।
- यदि पूरे सिर की विग है तो देखने में कृत्रिम ना दिखाई दें।
- कृत्रिम बाल अधिक लम्बे नही होने चाहिए अन्यथा वह प्राकृतिक नही दिखाई देते।
- विग्स का चयन सिर के आकार के अनुसार होना चाहिए।
- कृत्रिम बाल को धोते समय ऊपर की तरफ न मले अन्यथा बाल उलझ जाएगें और सिलाई से ढीले हो सकते है।

हेयर कलरिंग (Hair coloring)

उद्देश्य : इस अध्याय के अंत में आप निम्नलिखित कार्य सीख पायेंगें
- रंग का विज्ञान
- बाल को रंगने के मूलभूत सिद्धांत
- रंगो का विभाजन।

रंग का विज्ञान (Science of color): हेयर कलरिंग बाल के रंग को बदलने का विज्ञान है। यह एक कला भी है। जो सफेद बालों को या ब्लीचिंग किये हुए बालो को नया रंग देता है। पुरातन समय से महंदी, अखरोट की छाल, आंवला व कत्था इत्यादि द्वारा सफेद बालों को छुपाने के लिए किया जाता रहा है। हेयर कलरिंग के द्वारा बालों में प्राकृतिक रंग को पुर्नस्थापित करने का प्रयास किया जाता है। हेयर कलरिंग -

- व्यक्तित्व को उभारने

- फैशन

- समय के अनुसार

बाल को रंगने के मूलभूत सिद्धांत (Basic law of color): प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में रंग का बहुत महत्व है। जब प्रकाश एक प्रिज्म से होकर गुजरता है, जिसे क्रम से रंग बनते है उन्हें VYBGIOR (Violet, yellow, blue, green, indigo, orange, red) कहते है। बाल को रंगने के लिए रंग के कण (Pigments) का ज्ञान होना आवश्यक है।

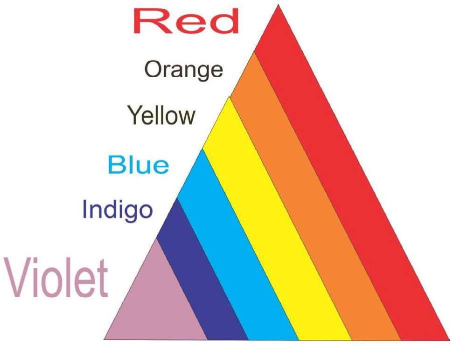

रंगो (Colours) को तीन श्रेणियों मे विभाजित किया जाता है

1 प्राथमिक रंग (Primary Colour)

2 द्वितीय रंग (Secondary Colour)

3 संपूरक रंग (complementary)

प्राथमिक रंग (Primary Colour)

यह रंग लाल,नीला और पीला होता है यह मूलभूत रंग है जो किसी मिश्रण से प्राप्त नही किए जाते है

द्वितीय रंग (Secondary Colour)

दो प्राथमिक रंगो को समान मात्रा मे मिला कर प्राप्त किया जाता है।

- पीला + लाल = नारंगी
- लाल + नीला = बैगनी
- पीला + नीला = हरा

3 संपूरक रंग (complementary Colour)

जो प्राथमिक और द्वितीय रंग एक दूसरे के विलोम होते है उन्हे संपूरक रंग कहा जाता है जब उन्हे एक दूसरे के आस पास रखा जाता है वो चमकीले दिखते है। किन्तु उन्हे मिलाया जाए तो वे उदासीन भूरा रंग में बदल जाता है।

- लाल रंग हरे रंग का संपूरक रंग है ।
- पीला रंग बैगनी रंग का संपूरक रंग है।
- नीला रंग नांरगी रंग का संपूरक रंग है।

नीला रंग एक मात्र शीतल रंग है और सूर्य की रोशनी, कठोर रसायनों तथा ऑक्सीकरण के कारण यह रंग सबसे पहले समाप्त होता है।

लाल रंग अधिक प्रकाश प्रदान करता है किन्तु यह नीले की अपेक्षा अधिक प्रतिरोधी होता है।

पीला रंग तीसरा प्राथमिक रंग है जो अन्य रंग के साथ मिलकर हल्का पन और चमक देता है। आँखो को यह अपेक्षाकृत अधिक बड़ा प्रतीत होता है। पीला रंग सबसे अंत में उड़ता है।

उद्देश्य : इस अध्याय के अंत में आप सीख पायेंगें

- स्थायी रूप से बाल को रंगाना
- अर्ध स्थायी रंग के द्वारा बाल को रंगना
- स्थाई विधि द्वारा बाल को रंगना।

बाल के रंगों का वर्गीकरण (Classification of hair color): बाल को रंगना एक रसायनिक प्रक्रिया है। बाल की रंगाई को तीन भागों में बांटा जा सकता है

- अस्थाई रंग (Temporary color)
- अर्ध स्थाई रंग (Semi permanent color)
- स्थाई रंग (Permanent color)

अस्थाई रंग (Temporary color): यह कलर बालों को ऊपरी लेयर क्यूटिकल (Cuticle) को कोट करने के लिए किया जाता है। जो कि बालों में तब तक टिका रहता है जब तक उन्हें शैम्पू न किया जाए। इस प्रकार के कलर बालों पर लम्बे समय तक नही टिके रहते । अस्थायी रंग

बाजार में विभिन्न रूपों व रंगों में उपलब्ध है।

लाभ (Advantages)

- अनचाहे बाल टोन (Unwanted hair tone) को छिपाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।
- बेजान बाल (Dull hair) में चमक (shine) प्रदान करता है।
- ग्राहक (Client) के प्राकृतिक बालों के रंग में किसी प्रकार का परिवर्तन नही लाता।
- अस्थायी रंग शैम्पू करने के पश्चात आसानी से उतर जाते है।
- इनका प्रयोग बालों पर तुरंत (Instant) किया जा सकता है।

हानियाँ (Disadvantages)

- प्रत्येक शैम्पू के पश्चात इसका प्रयोग दोबारा करना पड़ता है।
- ब्लीच किए हुए बालों पर यह बहुत डल और चमकहीन दिखाई देते है।

अर्द्ध स्थाई रंग (Semi permanent color) : अस्थायी रंग की अपेक्षा अर्द्ध स्थाई रंग अधिक समय तक टिके रहते है। इन्हें अल्प स्थाई रंग भी कहा जाता है। बाल के प्राकृति रंग को बिना प्रभावित करें धीरे धीरे बालों से फीके (Faded) हो जाते है। ये बालों में लगभग चार से

छः शैम्पू करने तक बालों में टिके रहते है।

लाभ (Advantages)

- इन रंगों का बालों की बनावट (Structure) पर कोई बुरा प्रभाव नही पड़ता किन्तु कभी कभी सूजन (Swelling) उत्पन्न हो सकती है।
- इसके द्वारा बालों में उपस्थित सफेद बालों को आसानी से छिपाया जा सकता है।
- इनमें पूर्व पट्टी परीक्षण (Patch test) की आवश्यकता नही होती।

हानियाँ (Disadvantages)

- पुरातन विधि के अनुसार इसके अंतर्गत सीमित रंग (Linited shades) उपलब्ध है।
- ये अधिक देर तक टिके न रहने के कारण प्रत्येक सप्ताह दोबारा प्रयोग करने पड़ते है।
- कई बार सफेद बालों को पूरी तरह से कवर नही कर पाते है।

स्थाई रंग **(Permanent color)** : यह एक ऑक्सीकारक एजेंट और क्षारीय तत्व होता है। जिसका pH 2.5 से 4.5 के बीच का होता है। इसका प्रयोग बाल के रंग को समान बनाने, हल्का करने और सफेद बालों को ढकने के लिए किया जाता है। इन रंगों को एनीलाइन डेरिवेटिव (aniline derivative) भी कहा जाता है।

हेयर कलर के प्रकार (Types of hair color) — अभ्यास 2.3.03 से सम्बन्धित सिद्धांत

उद्देश्य : इस अध्याय के अंत में आप सीख पायेंगें
- केमिकल हेयर कलर
- वेजिटेबल हेयर कलर
- प्रीलाइटिंग की विधि
- वैश्विक रंग की विधि
- हाई लाईटनिंग।

हेयर कलर के प्रकार **(Types of hair color)**

1 केमिकल हेयर कलर **(chemical hair coor)**

2 वेजिटेबल हेयर कलर **(Vegetable hair color)**

1 केमिकल हेयर कलर **(chemical hair color)**

एनीलाइन डेरिवेटिव **(aniline derivative)**

- इन उत्पादकों (products) को स्थायी उत्पादक(permanent products) कहते है जो सफेद और रंगीन बालों को कृत्रिम रंग (artificial pigments) देते हुए प्राकृतिक (natural) दिखाने में सक्षम होते है। यह लगभग सभी रंगों में प्राप्त किए जा सकते है।
- एनीलाइन डेरीवेटिव डवलेपर के साथ किया जाता है। इन्हें ऑक्सीडेशन टिन्ट्स (Oxidation tints) भी कहा जाता है। ये रंग के कण आसानी से कॉटेक्स लेयर के बीच एकत्रित हो जाते है।
- ये कलर बालों में रंग को हटाने और नए रंग को बालों में डालने का कार्य करता है। इसीलिए आसानी से कई शेड्स प्राप्त किये जा सकते है।
- इन रंगों का प्रयोग करने पर प्राकृतिक रंग एवं प्रयोग किए जाने वाले में कई प्रकार की रासायनिक परिवर्तन (chemical changes) उत्पन्न होते है। यदि प्रयोग किया गया रंग प्राकृतिक टोन से भिन्न हो तो नए बाल उगने पर कलर्ड और नये बालों के बीच में भेद रेखा (line of demarcation) देखी जा सकती है।

नोटः एनीलाइन डेरीवेटिव को कभी भी भौंहों तथा आँखों की बरौनी पर नही किया जाना चाहिए। ये आँखों की रोशनी पर बुरा प्रभाव डाल सकती है।

मेटेलिक और मिनरल डाई **(Metallic and mineral dyes)**

इन रंगों को ग्रेजुअल रंग भी कहा जाता है जो हवा के संपर्क में आने से बालों के रंग में बदलाव लाता है। इसी कारण इन उत्पादकों को अधिक प्रयोग में नही लाया जाता। कई बार दूसरी रसायनिक सेवाएँ (OTHER CHEMICAL SERVICS) के लिए भी अनफिट (unfit) बना देता है।

2 वेजिटेबल हेयर कलर **(Vegetable hair color)** : वेजिटेबल टिन्ट्स कई प्रकार के स्त्रोत से प्राप्त किए जा सकते है। जिनसे रंग की प्राप्ति होती है जैसे कि बालों को रंगने के लिए मेहंदी (Heena) को मुख्य प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त कैमोमाईल (Chamomile) सेग, इंडिगो (sage, Indigo) इत्यादि। इसके प्रयोग से अधिक समय बर्बाद होता है। साथ साथ अव्यवस्थित तकनीक (Messy technique) होने के कारण ये विधियाँ आज के समय में कम प्रयोग में आती है ।